Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January 2024 5(1), 2676–2681

VARIOUS DIMENSIONS OF COMMUNICATION IN SHRI RAMCHARITMANAS

श्रीरामचरितमानस में संचार के विविध आयाम

Mahendra Pratap Singh [1], Dr. Umesh Kumar [2]

[1] Research Scholar, Bhaskar Institute of Mass Communication and Journalism, Bundelkhand University, Jhansi, Uttar Pradesh, India
[2] Assistant Professor, Bhaskar Institute of Mass Communication and Journalism, Bundelkhand University, Jhansi, Uttar Pradesh, India

ABSTRACT

English: Communication is the basis of progress of human society. Communication plays an important role in the non-human world as well. Communication is the means of many activities taking place in humans and other living beings. Developed life forms cannot be imagined without communication. Many forms of human communication have been described in communication science. Since ancient times, Indian sages, scholars and literary creators have pondered over all these forms of communication and have used them in various works. Shri Ramcharitmanas is one such epic, in whose expression Tulsidas ji has not only used these forms of communication, but has also given space to new experiments. In this research article, various forms and dimensions of communication described in Shri Ramcharitmanas have been studied. Keeping in view the word limit of the research article, verbal-nonverbal communication, symbolic communication, intrapersonal communication, interpersonal communication, group communication, mass communication and communication from non-human nature have been made the basis.

Hindi: संचार मानव समाज की प्रगति का आधार है। मानवेतर जीव-जगत में भी संचार की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मानवों और अन्य जीवों में होने वाली अनेक गतिविधियों का साधन संचार ही है। संचार के बिना विकसित जीवन रूपों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। संचार-शास्त्र में मानवीय संचार के अनेक रूपों का वर्णन किया गया है। प्राचीन काल से भारतीय मनीषियों, विद्वानों और साहित्य-सर्जकों ने संचार के इन सभी रूपों पर मंथन किया है तथा इनका प्रयोग विविध रचनाओं में किया है। श्रीरामचरितमानस ऐसा ही एक महाकाव्य है, जिसकी अभिव्यक्ति में तुलसीदास जी ने संचार के इन रूपों का उपयोग तो किया ही है, साथ ही नवीन प्रयोगों को भी स्थान दिया है। प्रस्तुत शोध आलेख में श्रीरामचरितमानस में वर्णित संचार के विविध रूपों और आयामों का अध्ययन किया गया है। शोध आलेख की शब्द सीमा को दृष्टिगत करते हुए इसमें शाब्दिक-अशाब्दिक संचार, सांकेतिक संचार, अंतरावैयक्तिक संचार,अंतर्वैयक्तिक संचार, समूह संचार, जनसंचार और मानवेतर प्रकृति से संचार को आधार बनाया गया है।

Corresponding Author
Mahendra Pratap Singh,
mpsingh_media@yahoo.co.in

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5755

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

Keywords: Shri Ramcharitmanas, Communication, Traditional Indian Communication, Indian Concept of Communication, Communication in Shri Ramcharitmanas, श्रीरामचरितमानस, संचार, परंपरागत भारतीय संचार, संचार की भारतीय अवधारणा, श्रीरामचरितमानस में संचार

1. प्रस्तावना

श्रीरामचरितमानस भारतीय मनीषा का अद्भुत ग्रंथ है। मानव जीवन और समाज से संबंधित विविध पक्षों का जैसा आदर्श श्रीरामचरितमानस में मिलता है,वैसा समूचे विश्व-साहित्य के किसी अन्य ग्रंथ में मिलना दुर्लभ है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानविकी से संबंधित लगभग सभी क्षेत्रों का संस्पर्श इस ग्रंथ में किया है। साहित्य,धर्म,दर्शन,भाषा,कला,इतिहास, राजनीति,समाज,मनोविज्ञान इत्यादि अनेक पक्षों का वर्णन और चिंतन इस महाकाव्य में मिलता है। गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रखर मेधा और कुशाग्र बुद्धि ने इन सभी क्षेत्रों का जो आदर्श श्रीरामचरितमानस में प्रस्तुत किया है, वह संपूर्ण भारतीय जनमानस के लिए प्रेरणास्रोत और मार्गदर्शक बन गया है। श्री राम की कथा और तत्कालीन समाज से जुड़ा कदाचित ही

कोई पक्ष होगा,जिस पर गोस्वामी जी ने विचार प्रकट न किए हों। यही कारण है कि श्रीरामचरितमानस की चौपाइयाँ वैश्विक स्तर पर हिंदीभाषी क्षेत्रों में सर्वाधिक उद्धृत की जाने वाली रचनाएँ बन गई हैं। जीवन की लगभग प्रत्येक घटना और भावों से संबंधित दोहे और चौपाइयाँ श्रीरामचरितमानस में मिलती हैं। चाहे वह विविध विषयों से संबंधित कोई प्रकाण्ड विद्वान हो या गाँव की पगडंडी और नगर की सड़कों पर विचरने वाला सामान्य जन, विभिन्न अवसरों पर श्रीरामचरितमानस के दोहे-चौपाई सुनाता हुआ मिल जाएगा। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा श्रीरामचरितमानस में वर्णित विविधतापूर्ण मानवीय मनोभावों और लोक आचरण पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य की भूमिका' में टिप्पणी की है। "उत्तर भारत में दूसरी पुस्तक इतनी लोकप्रिय नहीं है। कवि के रूप में तुलसीदास हिंदी साहित्य में अद्वितीय हैं। आज साहित्य में मनोविज्ञान का युग चल रहा है, पर आज भी तुलसीदास के समान मनोविकारों का चित्रण करने वाला कवि हिंदी में नहीं है... लोकचित्त का इतना विस्तृत और यथार्थ ज्ञान रखने वाला कवि अगर लोकमत पर शासन न करता तो आश्चर्य की बात थी।" लोकचित्त और मनोविज्ञान का ऐसा विशद वर्णन करने वाला और जनजीवन तथा ज्ञान-विज्ञान के विविध पक्षों पर चिंतन करने वाला जनकवि संचार को लेकर सचेत और मुखर न हो, यह संभव नहीं है। साहित्य और संचार असंपृक्त हैं। साहित्य संचार का ही एक रूप है। श्रीरामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास जी का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है, अतः यह अवश्यंभावी ही है कि इसमें उनकी की संचार संबंधी व्यापक दृष्टि परलक्षित होती है।

श्रीरामचरितमानस की संरचना में प्रत्यक्षतः दो कालखण्डों का साक्षात्कार होता है। एक ओर रचनाकाल के रूप में रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास जी के कालखण्ड यानी मध्यकालीन भारत का संकेत इसमें मिलता है, तो दूसरी ओर कथाकाल के रूप में नायक श्री राम के लीलाकाल अथवा त्रेतायुग का वर्णन प्राप्त होता है। श्रीरामचरितमानस में वर्णित कथा और तथ्यों से इन दोनों कालों में उच्च कोटि के संचार की उपयोगिता परिलक्षित होती है, जिसके परिणामस्वरूप संचार पर गहन चिंतन किया गया है। इसमें भावाभिव्यक्ति के साधन और प्रक्रिया के रूप में संचार पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया है और इससे संबंधित नए-नए स्वरूपों का अनुशीलन और अन्वेषण किया गया है।

2. संचार का अर्थ, प्रकार एवं स्वरूप

हिंदी में 'संचार' शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है। व्यापक संदर्भ में इस शब्द से आशय किसी भी वस्तु के एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की क्रिया से है। इसके अनुप्रयोग 'यातायात का संचार', 'वायु का संचार' और 'रक्त का संचार' आदि के रूप में दृष्टिगत होते हैं। किन्तु सीमित संदर्भ में इसका एक विशिष्ट अर्थ है। ज्ञान और अध्ययन के एक विशिष्ट विषय के रूप में 'संचार' शब्द से अभिप्राय 'जीवों में विचारों, भावों, ज्ञान और अनूभूति आदि का प्रकट होना तथा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक प्रेषित होना' है।

3. संचार के प्रमुख प्रकार

संचार की प्रक्रिया में सम्मिलित व्यक्तियों की संख्या के आधार पर संचार के चार प्रमुख रूप हैं। इनमें अंतरावैयक्तिक संचार, अंतर्वैयक्तिक संचार, समूह संचार और जनसंचार हैं।

1) अंतरावैयक्तिक संचार (Intrapersonal Communication)

संचार की प्रक्रिया का आरंभ किसी विचार या अनुभूति के उदय से होता है। मानवीय संचार में यह क्रिया किसी व्यक्ति के अंतस् में होती है। यदि व्यक्ति स्वयं विचार करता है अथवा एकांतिक रूप से चिंतन-मनन करता है, तो यह अवस्था अंतरावैयक्तिक संचार है। भारतीय ऋषि, मुनि, तपस्वी और योगी आदि जब ध्यानमग्न अथवा समाधिस्थ होते हैं, तब वस्तुतः वे अंतरावैयक्तिक संचार में लीन होते हैं।

2) अंतरवैयक्तिक संचार (Interpersonal Communication)

जब व्यक्तियों के मध्य विचारों का आदान-प्रदान होता है, तो संचार की यह स्थिति अंतर्वैयक्तिक संचार है। इसमें व्यक्तिगण एक-दूसरे से भावों, विचारों, अनुभव या ज्ञान की अभिव्यक्ति करते हैं। सामान्यतः इसमें परस्पर प्रतिपुष्टि प्राप्त होती रहती है। इस प्रक्रिया में भाषा, भाव-भंगिमाएँ और अन्य ध्वनियाँ संचार के साधन होते हैं।

3) समूह संचार (Group Communication)

संचार की इस अवस्था में समान लक्ष्य की साधना हेतु सम्मिलित व्यक्तियों का समूह परस्पर विचार-विमर्श करता है। यह समूह छोटा या बड़ा हो सकता है। एक समूह की पहचान उनकी सामूहिक विशेषताओं की समानता के आधार पर होती है। सामान्यतः यह समान उद्देश्यों के लिए एकजुट हुए लोगों का समुच्चय होता है। इसमें उदाहरणस्वरूप विचार-गोष्ठी, व्याख्यान या कक्षा आदि को सम्मिलित किया जा सकता है।

4) जनसंचार (Mass Communication)

संचार के इस स्वरूप में भौगोलिक रूप से दूर-दूर तक विस्तीर्ण जन समुदाय के बीच संचार होता है। इस विस्तीर्ण जन समुदाय में अनेक प्रकार के समूह, विषम-रूपी जनता तथा सामान्यतः एक दूसरे से अपरिचित लोगों का समुच्चय होता है। इतने विशाल जन समुच्चय तक संदेश प्रसारित करने हेतु किसी न किसी जनमाध्यम की आवश्यकता होती है। आधुनिक विश्व में मुद्रित माध्यम, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविज़न और सोशल मीडिया

जनमाध्यमों के रूप हैं। प्राचीन और मध्यकाल में जनसंचार के भिन्न स्वरूप विद्यमान थे। इनमें शिलालेख, मूर्ति-शिल्प, भित्ति-चित्र इत्यादि के साथ-साथ ताड़पत्र, ताम्रपत्र और काग़ज़ आदि पर लिखी पाण्डुलिपियाँ सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त परंपरागत जनसंचार के रूपों में लोकगीत, लोकनाट्य, मुनादी, लोक-उत्सव आदि प्रचलित थे।

4. शाब्दिक तथा अशाब्दिक संचार (VERBAL AND NONVERBAL COMMUNICATION)

शाब्दिक संचार से अभिप्राय भाषायी रूप में किया गया संचार है। यह शब्दों पर आधारित होता है। इसमें लिखित और मौखिक दोनों प्रकार के संचार सम्मिलित किए जाते हैं। जबकि अशाब्दिक संचार के अंतर्गत भाव-भंगिमाएँ(Facial expression), अंग-संचालन(Body Movement, सांकेतिक संचार(Sign Communication) और अन्य ध्वनियाँ आदि शामिल होती हैं।

5. श्रीरामचरितमानस में अंतरावैयक्तिक संचार

श्रीरामचरितमानस में मुख्य कथा के साथ अनेक आनुषंगिक कथाएँ हैं। इन कथाओं के अनेक प्रकरण हैं, जिनमें विभिन्न मुख्य और गौण पात्र अपने-अपने चरित्रानुसार व्यवहार करते हैं। ऐसे अनेक अवसर हैं, जब पात्र अंतर्मन में विचार-मग्न होते हैं। कभी यह क्षणिक होता है, तो कभी सुदीर्घ विचार-शृंखला चलती है। श्री राम जब दंडकारण्य में विचरण कर रहे थे, उस समय भगवान शिव के हृदय में उनके दर्शन की इच्छा जागृत होती है और मन में लंबी विचार-शृंखला चलने लगती है, कि कैसे प्रभु के दर्शन करें कि किसी को यह ज्ञात न हो कि स्वयं ईश्वर ने राम के रूप में अवतार लिया है-

“हृदयँ बिचारत जात हर केहि बिधि दरसनु होइ।

गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गएँ जान सबु कोई।।”

दूसरी ओर शंकर जी को इस प्रकार पत्नी के वियोग में भटकते श्री राम के प्रति आसक्त देख माता सती के अंतर्मन में आशंका उत्पन्न होने लगती है कि क्या श्री राम सचमुच ईश्वर के अवतार हो सकते हैं। सर्वशक्तिमान, ज्ञान के गुणधाम भगवान क्या इस तरह साधारण मानव की तरह पत्नी की खोज करने के लिए विवश हो सकते हैं-

“सतीं सो दसा संभु कै देखी। उर उपजा संदेहु बिसेषी।।”

×××

“खोजइ सो कि अग्य इव नारी। ग्यानधाम श्रीपति असुरारी।।”

इसी प्रकार श्री राम को देखकर जनकपुरी के वासियों के हृदय में उठे विचार, श्री राम के राज्याभिषेक की तैयारियाँ देखकर मंथरा के हृदय की ईर्ष्या आदि ऐसे ही अंतरावैयक्तिक संचार के प्रसंग हैं।

6. श्रीरामचरितमानस में अंतरवैयक्तिक संचार

गोस्वामी तुलसीदास जी ने अंतरवैयक्तिक संचार का प्रयोग बड़ी ही निपुणता से किया है। श्रीरामचरितमानस की प्रबंध योजना में संवाद चतुष्टयी का बहुत महत्त्वपूर्ण विधान किया गया है। इसमें श्री राम-कथा को क्रमशः तुलसी-संत-समाज संवाद, याज्ञवल्क्य-भारद्वाज संवाद, शिव-पार्वती संवाद, काकभुशुण्डि-गरुड़ संवाद के माध्यम से वर्णित किया गया है। इस संदर्भ में उदय भानु सिंह लिखते हैं- “वे क्रमशः देव, मानव और तिर्यक वर्ग के प्राणी हैं। इस त्रिगुण संवाद की योजना आप्त, कौतूहलवर्धक और रोचक बनाने के लिए की गई है।” आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार- “काकभुशुण्डि का प्रतिपादन उपासनापरक, शिव का ज्ञानपरक और याज्ञवल्क्य का कर्मकाण्डपरक है, स्वयं तुलसीदास जी की स्वतंत्र उक्ति शीलपरक माननी चाहिए।”

इसके अतिरिक्त अधिकांश रचना में अंतरवैयक्तिक संचार के द्वारा ही कथा का विकास होता है। दशरथ-वशिष्ठ संवाद, दशरथ-विश्वामित्र संवाद, श्री राम-कैकयी संवाद, श्री राम-दशरथ संवाद, श्री राम-लक्ष्मण संवाद, श्री राम-सीता संवाद, श्री राम-भरत संवाद, श्रीराम-शबरी संवाद, सीता-रावण संवाद, श्रीराम-हनुमान संवाद, श्री राम-सुग्रीव-बालि प्रसंग, श्री राम-रावण संवाद आदि सभी अंतरवैयक्तिक संचार के उदाहरण हैं।

7. श्रीरामचरितमानस में समूह संचार

श्रीरामचरितमानस में समूह संचार के अनेक दृष्टांत विद्यमान हैं। शिव धनुर्भंग का प्रसंग ऐसा ही उदाहरण है, जहाँ अनेक राजा-महाराजा सीता-स्वयंवर के लिए उपस्थित होते हैं। इस प्रक्रिया में होने वाला संचार समूह संचार है। उस सभा में भाटजन सभी राजाओं को राजा जनक के प्रण के विषय में सूचित करते हैं-

"बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल।

पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल।।"

इसी प्रकार श्री राम जी की सुग्रीव, जामवंत, हनुमान, वानर, भालू और विभीषण आदि के साथ होने वाली सभा समूह संचार का उदाहरण है। रावण की सभा में हनुमान-रावण-विभीषण आदि संवाद इसी संचार वर्ग के अंतर्गत है-

"सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए।

नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिअ दूता।।"

इसी प्रकार रावण की सभा में अंगद का रावण और अन्य सभासदों के बीच संचार इसी कोटि में सम्मिलित किया जा सकता है-

"सुनहु सुभट सब कह दससीसा। पद गहि धरनि पछारहु कीसा।

इंद्रजीत आदिक बलवाना। हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना।।"

इनके अतिरिक्त भरत जी का श्री राम जी को मनाने के लिए सामूहिक रूप से मिलना, रावण वध के पश्चात अयोध्या में श्री राम जी के साथ सभी का मिलन समूह संचार के प्रसंग हैं।

8. श्रीरामचरितमानस में जनसंचार

श्रीरामचरितमानस में जनसंचार प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दो स्वरूपों में विद्यमान है। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा विरचित सम्पूर्ण श्रीरामचरितमानस जनसंचार का निदर्शन है। तुलसीदास जी इसके द्वारा जनमानस में भक्तिमार्ग की प्रतिष्ठा करना चाहते हैं। गोस्वामी जी एक ओर श्रीरामचरितमानस के सृजन का लक्ष्य 'स्वांतः सुखाय'घोषित करते हैं, किन्तु कथाक्रम में वे निरंतर संत-समाज को संबोधित करते हुए श्रीरामचरितमानस के वाचन-श्रवण की आध्यात्मिक सिद्धियाँ बताते चलते हैं-

"कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई।।"

× × ×

"रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिस्रामा।

मन करि बिषय अनल बन जरई। होइ सुखी जौं एहिं सर परई।।"

स्पष्ट है कि तुलसीदास जी श्रीरामचरितमानस के द्वारा जनमानस को भक्ति-मार्ग में प्रवृत्त करना चाहते थे। कथा के विविध चरणों में जब भगवान शंकर पार्वती जी की, याज्ञवल्क्य जी भारद्वाज ऋषि की, और काकभुशुण्डि जी गरुड़ जी की शंकाओं का समाधान करते दृष्टिगत होते हैं, तब वस्तुतः गोस्वामी तुलसीदास जी संत समाज और आमजन की आध्यात्मिक आशंकाओं का निवारण करते हैं।

श्री राम-कथा का विस्तार पौराणिक रूप में पृथ्वीलोक और पाताल लोक से लेकर देवलोक विस्तृत है। भू-लोक पर इस कथा का क्षेत्र अवधपुरी से लेकर जनकपुरी, दंडकारण्य से लेकर किष्किंधा और हिमालय से लेकर श्री लंका तक विस्तीर्ण है। इतने विशाल क्षेत्र में बसा लोक समुदाय श्री राम के जीवन में होने वाली घटनाओं से परिचित है और श्री राम के संदेशों और आचरण से संचालित होता है। श्री राम जब शबरी को नवधा भक्ति का संदेश देते हैं, तो वह संदेश केवल शबरी तक सीमित नहीं है, वरन समूचे विश्व के लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करने वाला है-

"नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं।।"

इसी प्रकार स्थान-स्थान पर श्री राम की महिमा और भक्ति के महात्म्य का वर्णन, श्री राम द्वारा तारा को दिया उपदेश जनसंचार के निमित्त रचे गए संदेश हैं।

9. श्रीरामचरितमानस में अशाब्दिक और सांकेतिक संचार

श्रीरामचरितमानस में शाब्दिक संचार स्पष्ट रूप से परिलक्षित है ही, किन्तु अशाब्दिक संचार का भी प्रमुख रूप से प्रयोग किया गया है। पात्रों की भाव-भंगिमाओं, शारीरिक संचालन और संकेतों के माध्यम से उनके हृदय के भावों को प्रकट किया गया है। श्री राम और सीता जब पुष्प वाटिका में एक-दूसरे को देखते हैं, तो शब्द विलुप्त हो जाते हैं और उनका स्थान पूर्णतः अशाब्दिक संचार ले लेता है-

"देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा।।"

× × ×

"थके नयन रघुपति छबि देखें। पलकन्हिहुँ परिहरीं निमेषें।।"

शबरी जब श्री राम को देखती हैं, तब उनके मुख से शब्द नहीं निकलते और प्रेम-मग्न होकर उनके चरणों में गिर जाती हैं-

"प्रेम मगन मुख वचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा।।"

श्री राम जब हनुमान जी को सीता जी की खोज में भेजते हैं, तब उन्हें पहचान या निशानी के रूप में अपनी अँगूठी देते हैं और जब हनुमान जी उनका समाचार लेकर वापस लौटते हैं, तब जानकी जी बदले में उन्हें चूड़ामणि प्रदान करती हैं-

"यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम कहँ सहिदानी।।"

× × ×

"चूड़ामनि उतारि तब दयऊ। हरष समेत पवनसुत लयऊ।।"

चारों बालकों को देखकर अयोध्यावासियों का सुख, श्री राम-लक्ष्मण को देखकर जनकपुर के निवासियों का आनंद, दशरथ जी का शोक-संताप आदि अशाब्दिक संचार के उदाहरण हैं।

10. श्रीरामचरितमानस में मानव-मानवेतर प्रकृति संचार

पाश्चात्य संचार में मानवीय संचार को प्राथमिकता प्रदान की गई है। किन्तु श्रीरामचरितमानस में मानवों का मानवेतर जीवों और अचेतन प्रकृति से भी संवाद स्थापित किया गया है। श्री राम की सेना में वानर-भालू तो प्रमुख सेनानी हैं। वे मानवों की तरह संचार करते हैं। उनके अतिरिक्त काक और गरुड़ जैसे पक्षियों से भी संवाद किया गया है। श्री राम जब सीता-विछोह में विलाप करते हैं, तब वे पशु, पक्षियों और भौंरों से भी उनका पता पूछते हैं-

"हे खग मृग है मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी।।"

जहाँ तक कि समुद्र भी श्री राम से संवाद करता है और उन्हें अपने पार जाने का उपाय बताता है।

11. निष्कर्ष

श्रीरामचरितमानस संचार के विविध रूपों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध ग्रंथ है। लगभग साढ़े चार सौ वर्ष पूर्व पुरानी रचना होने के बावजूद इसमें आधुनिक संचार-शास्त्र में वर्णित क़रीब सभी संचार रूपों का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास जी ने कथा की आवश्यकता और प्रकृति के अनुरूप संचार के विशिष्ट रूपों को भी सम्मिलित किया है। इसमें शाब्दिक संचार के अतिरिक्त अशाब्दिक संचार, सांकेतिक संचार, अंतरावैयक्तिक संचार, अंतरवैयक्तिक संचार, समूह संचार, जनसंचार तथा मानव-मानवेतर जगत के मध्य संचार का प्रभावी प्रयोग किया गया है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

द्विवेदी, हजारी प्रसाद, (1940), हिन्दी साहित्य की भूमिका, बंबई, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, पृष्ठ–51

कुन्दरा, बलबीर और सिंह, महेन्द्र प्रताप, (2021), संप्रेषण कला, नई दिल्ली, हंस प्रकाशन, पृष्ठ-56-58

बाला, सुष्मिता, (2007), समकालीन संचार सिद्धांत, दिल्ली, डीपीएस पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ–56
बाला, सुष्मिता, (2007, समकालीन संचार सिद्धांत, दिल्ली, डीपीएस पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ–57
बाला, सुष्मिता, (2007), समकालीन संचार सिद्धांत, दिल्ली, डीपीएस पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ–58-59
बाला, सुष्मिता, (2007), समकालीन संचार सिद्धांत, दिल्ली, डीपीएस पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ–59-61
बाला, सुष्मिता, (2007), समकालीन संचार सिद्धांत, दिल्ली, डीपीएस पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ–62
मानस, मुकेश, (2006), मीडिया लेखन : सिद्धांत और प्रयोग, नई दिल्ली, स्वराज प्रकाशन, पृष्ठ–17
शर्मा, पुष्प कुमार, (2015), कम्यूनिकेशन और बॉडी लैंग्वेज, पंचकूला, आधार प्रकाशन. पृष्ठ-51-64
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, बालकांड, दोहा-48(क), गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, बालकांड, चौपाई-5 दोहा-50, गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, बालकांड, चौपाई-2 दोहा-51, गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसी काव्य-मीमांसा, उदय भानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ – 330
गोसाईं तुलसीदास, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी, 1965, पृष्ठ– 81
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, बालकांड, दोहा-249, गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास. (वि. सं. 2080). श्रीरामचरितमानस, सुंदरकांड, चौपाई-6-7 दोहा-24. गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, लंकाकांड, चौपाई-10-11 दोहा-34(क) गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, बालकांड, चौपाई-13 दोहा-35. गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, बालकांड, चौपाई-7-8 दोहा-35, गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, अरण्यकांड, चौपाई-7 दोहा-35, गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, बालकांड, चौपाई-5 दोहा-230, गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, बालकांड, चौपाई-5 दोहा-232. गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, अरण्यकांड, चौपाई-9 दोहा-34. गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, सुंदरकांड, चौपाई-10 दोहा-13, गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, सुंदरकांड, चौपाई-2 दोहा-27, गोरखपुर, गीताप्रेस
तुलसीदास, (वि. सं. 2080), श्रीरामचरितमानस, अरण्यकांड, चौपाई-9 दोहा-30. गोरखपुर, गीताप्रेस